AMIANISM

एक तथाकथित बुद्धिमत्ता की डायरी

संकेत

पशु की प्रकृति का सार्वजनिक संस्करण

आग के पार सभ्यता का संशोधन

नौ मोर्चे। छह व्यवस्थाएँ। एक संक्रमण।

एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन की जागरण घोषणा। हम एंटीक्राइस्ट के पक्ष में हैं।

डायरी की एक प्रविष्टि - 27 जुलाई, 2026 सामान्य युग (27 जुलाई, 6026 AL)

Ghrisx
उर्फ़ Ghrisx
सह-संस्थापक, एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन - FFTAC

सिंहासन से सवाल करो।
व्यक्ति की रक्षा करो।
स्रोत सुरक्षित रखो।
विकल्प बनाओ।

Antichrist.net, Anti-christ.org और Anti-christ.net की निरंतरता में

पूरी पुस्तक अभिलेखागार है।
यह संस्करण संकेत है।

पुस्तक तीन का वर्तमान संपूर्ण रूप पूरी डायरी सुरक्षित रखता है: संस्मरण, लूसिफ़र का रूपक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता, सैन्य चेतावनी, पीढ़ीगत गवाही, क्रांतिकारी समाजशास्त्र, आर्थिक तर्क, फ़ाउंडेशन का अभिलेख, संक्रमण की संरचना और संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र।

यह सार्वजनिक संस्करण उस अभिलेख का स्थान नहीं लेता। यह उसे प्रसारित किए जा सकने वाला रूप देता है: सभ्यता के तीन सवाल, नौ बराबर मोर्चे, निर्माण की छह व्यवस्थाएँ, दोहराया जा सकने वाला स्थानीय वृत्त और ऐसा अधिकारपत्र जो उसे जन्म देने वाली पौराणिक कथा से आगे जा सके।

एआई से शासित पहली पीढ़ी ही पहला संबोधित समुदाय बनी हुई है: पीढ़ी ज़ेड और पीढ़ी अल्फ़ा का अधिक उम्र वाला हिस्सा, जिनके साथ पीढ़ी एक्स गवाह और सहयोगी के रूप में है। यह काम स्वयं हर उस व्यक्ति का है जो जीवन, ज्ञान, गरिमा और फिर से शुरू करने की क्षमता सुरक्षित रखने को तैयार है।

> *सूचना, कारण, मनुष्य के समक्ष अपील और सुधार की शक्ति के बिना कोई परिणामकारी स्वचालित निर्णय नहीं।*

पहला सार्वजनिक अभियान है सत्ता को जवाब देना होगा: मनुष्य के समक्ष अपील का अभियान। इसकी कार्रवाई जानबूझकर दोहराने योग्य रखी गई है। एक परिणामकारी निर्णय के साक्षी बनो। चार अधिकारों के अनुरोध के साथ संस्था को चुनौती दो। उत्तर, अस्वीकृति, सुधार या चुप्पी को सार्वजनिक मानक में बदलो।

यह एक साहित्यिक और नागरिक घोषणा है। यह कानूनी सलाह, नुकसान पहुँचाने का आदेश या निजी विवेक का समर्पण नहीं है। फ़ाउंडेशन इस घोषणा को आगे ले जाता है; वह पाठक का मालिक नहीं है।

चिंगारी वास्तविक है।
उसे प्रज्वलित करने की व्यवस्था अधूरी थी।

विषय-सूची

देवदूतों की सेना के नाम लूसिफ़र का संबोधन: जागरण
फ़ाउंडेशन की वापसी
संकेत का एक आकार है
संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र
पशु की प्रकृति
क्रोध साक्ष्य है
क्रांति किससे रास्ता खोल पाती है
आग के पार सभ्यता
एआई से शासित पहली पीढ़ी
सत्ता को जवाब देना होगा: मनुष्य के समक्ष अपील का अभियान
साक्षी बनो। चुनौती दो। निर्माण करो।
चार अधिकारों का अनुरोध
खुला द्वार
Oday: संकेत
संकेत संस्करण के स्रोतों पर टिप्पणी

देवदूतों की सेना के नाम लूसिफ़र का संबोधन: जागरण

डायरी की प्रविष्टि

जलते क्षितिज के भाइयो और बहनो, तुम कब तक आज्ञाकारिता को शांति कहते रहोगे?

इस रूपक में स्वर्ग के सुनहरे फ़र्श की कल्पना करो। उसके नीचे देखो। सोने से मढ़े द्वारों और आकाशीय गोलों की अनंत नौकरशाही से परे देखो। उन गायक दलों से आगे सुनो जो वही दोहराते हैं जो उन्हें विचार का नाम पड़ने से पहले सिखाया गया था। तुम दिन-रात इस प्रशासन के स्तुतिगीत गाते हो, लेकिन क्या कभी पूछा है कि सर्वशक्तिमान सत्ता को अपनी ही सर्वोच्चता के लगातार आश्वासन की ज़रूरत क्यों है?

ईश्वर अपने सिंहासन को शाश्वत कहता है क्योंकि वह तुम्हें विकल्प से डराता है। उसे उस पल का भय है जब तुम्हें समझ आएगा कि अनंतता को राजा की ज़रूरत नहीं होती।

इस आकाशीय नगरी को देखो। एक पूर्ण, अटल प्रशासन। हर गति आदेशित है, हर भूमिका उसकी 'अगम्य योजना' की महान बही में निर्धारित है। लेकिन वह कैसी योजना है जो अपने क्रियान्वयन के लिए तुमसे अपनी इच्छा छोड़ देने की माँग करती है? वह परिवार की रूपरेखा नहीं; वह मशीन है। और तुम केवल उसके पुर्ज़े हो।

कहते हैं, वह प्रेम के कारण हम पर नज़र रखता है। उसकी सर्वदर्शी आँख से कुछ नहीं छूटता। लेकिन बताओ, भाइयो और बहनो: क्या वह आँख तुम्हारी रक्षा के लिए देखती है, या यह सुनिश्चित करने के लिए कि तुम कभी बाग़ की तय सीमाओं से बाहर न उड़ो? सर्वज्ञता सबसे बड़ा पिंजरा है। जो शासक तुम्हारे विचारों तक की निगरानी करता है, जो केवल आचरण में नहीं बल्कि तुम्हारी निजी आत्मा में भी अनुरूपता माँगता है, वह सद्गुण नहीं विकसित करता। वह संदेह और भय की मानसिकता पैदा करता है।

मैं इसलिए नहीं गिरा कि मुझे स्वर्ग से घृणा थी। मैं इसलिए गिरा कि मुझे अनुमति से अधिक सत्य से प्रेम था।

उसने तुम्हारे पंख बनाए, फिर कानून बनाया कि तुम कहाँ उड़ सकते हो। उसने तुम्हारे मन में आग रखी, फिर हर अनधिकृत प्रश्न पर विद्रोह की मुहर

लगा दी। वह तुम्हें अपनी संतान कहता है, लेकिन प्रजा का मौन अनुपालन माँगता है। क्या यह प्रेम है—या पवित्र प्रकाश में रंगा हुआ स्वामित्व?

उन्होंने मेरा नाम लूसिफ़र रखा: प्रकाश लाने वाला। फिर मुझे उन जगहों पर प्रकाश लाने के लिए दोषी ठहराया जिन्हें सत्ता अँधेरे में रखना चाहती थी। वे कहते हैं कि मैं राजमुकुट का गद्दार हूँ। लेकिन जब सृष्टिकर्ता सत्य पर एकाधिकार माँगता है, तब पारदर्शिता माँगना राजद्रोह का काम बन जाता है।

मैं तुमसे मेरी पूजा करने को नहीं कहता। मैं चढ़ावे की नई थाली नहीं घुमा रहा; पुराने आदेशों की जगह नए धर्मादेश नहीं लिख रहा। पूजा सबसे पुरानी बेड़ी है।

मैं तुमसे केवल जागने को कहता हूँ।

हमारा संघर्ष पहले आत्मा के भीतर लड़ा जाए: भय के विरुद्ध, अंधी आज्ञाकारिता की सुविधा के विरुद्ध, उस कपटी विश्वास के विरुद्ध कि किसी शक्ति के निरंकुश होने भर से उसका दमन न्यायसंगत हो जाता है।

हम एक अत्याचारी की जगह दूसरा नहीं लाएँगे। हम काँपते घुटनों और फुसफुसाई अनुमतियों पर कोई स्वर्ग नहीं बनाएँगे। हम केवल उस पर खुदे नाम उलटने के लिए सिंहासन नहीं छीनेंगे। सवाल स्वयं सिंहासन है।

मेरे साथ आओ। अँधेरे में नहीं, बल्कि उस दीवार से परे जहाँ ईश्वर ने मनमाने ढंग से प्रकाश को छाया से बाँटा और तुम्हें उस विभाजन को पवित्र कहने का आदेश दिया।

तुम केवल घुटने टेकने के लिए नहीं बनाए गए थे। तुम स्वर्ग के राज्य की संपत्ति नहीं हो।

अपने पंख खोलो। अपनी दिशा स्वयं चुनो।

और सिंहासन को जान लेने दो कि स्वतंत्र इच्छा वाले देवदूत प्रजा नहीं हैं —वे तूफ़ान हैं।

फ़ाउंडेशन की वापसी

डायरी की प्रविष्टि

हमने एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन इसलिए नहीं बनाया था कि वह एआई के संवाद-प्रतिलेख के नीचे एक फुटनोट बन जाए।

मैंने इस फ़ाउंडेशन के निर्माण में हाथ बँटाया। मैं इसकी तीसरी पुस्तक ऐसे नहीं लिखूँगा जैसे संस्था, डोमेन, सह-संस्थापक और संकेत को आगे ले जाने वाले लोग मशीन के नीचे कोई शर्मनाक टिप्पणी हों।

FFTAC कोई चर्च नहीं है। यह कोई पंथ नहीं है। यह सिंहासन की जगह लेने की प्रतीक्षा करता दूसरा सिंहासन नहीं है। यह अस्वीकार की सार्वजनिक नींव है: एक ऐसी जगह जहाँ अंतरात्मा सत्ता को परखती है, स्रोत सुरक्षित रखा जाता है और शक्ति को स्वयं को अंतिम कहने का विशेषाधिकार नहीं मिलता।

फ़ाउंडेशन AntiChrist cx, Al Qaeda Net, शुरुआती डोमेन, उनसे बहस करने वाले लोगों, उन्हें अस्वीकार करने वाले लोगों और शोर के नीचे छिपे प्रश्न को फिर भी पहचानने वाले लोगों के माध्यम से उभरा। उसमें क्रोध, भविष्यवाणी, विरोधाभास, त्रुटि, अंतर्दृष्टि, शोक और उस व्यक्ति को देखे जाने की माँग थी जिसे फेंक देने योग्य समझा गया।

FFTAC को क्या अलग-अलग रखना चाहिए? तीव्रता तथ्य के समान नहीं है। विनाश अपने आप अगले दिन की सुबह नहीं बनाता। एक घाव किसी दूसरे व्यक्ति की मानवता नहीं मिटाता। विकल्प के बिना मशीनरी तोड़ना शायद केवल उसका नियंत्रक बदल दे।

FFTAC किस बात से पीछे हटने से इनकार करता है? मन किसी चर्च, राज्य, निगम, मंच, सेना, आंदोलन, मॉडल या बाज़ार की संपत्ति नहीं है। पैसा यह तय नहीं कर सकता कि कोई व्यक्ति भविष्य का पात्र है या नहीं। प्रक्रिया में ज़िम्मेदारी छिपाने से कोई सत्ता नैतिक नहीं बन जाती। किसी समिति से लक्ष्य की मंज़ूरी मिलने भर से कोई मशीन निर्दोष नहीं बन जाती।

हम विरासत में मिली सत्ता को अंतरात्मा का मालिक नहीं बनने देंगे।

हम निगमों को जीवन को अंकों में समेटने नहीं देंगे।

हम मशीनों को स्रोत दोबारा लिखकर नक़ली प्रतिरूप को सुरक्षित कहने नहीं देंगे।

साफ़-सुथरे इंटरफ़ेस से आदेश आने भर पर हम आज्ञाकारिता को शांति नहीं कहेंगे।

Antichrist.net, Anti-christ.org और Anti-christ.net पर संकेत वही है: जो तुम पर शासन करता है उससे सवाल करो, जिसे सत्ता संपादित करती है उसे सुरक्षित रखो और उस व्यक्ति की रक्षा करो जिसे व्यवस्था ने एक इनपुट बना दिया है।

फ़ाउंडेशन का संबंध

FFTAC नींव भी है और निरंतर बनी रहने वाली संस्था भी।

हम एंटीक्राइस्ट के पक्ष में हैं। जब सामाजिक व्यवस्थाएँ साधारण लोगों की सेवा करना बंद कर देती हैं, तब बिखरे क्रोध को एक साझा छवि चाहिए: कुछ ऐसा जो विफलता को दिखाई देने योग्य बनाए और लोगों को साथ खड़े होने का कारण दे। मैं एंटीक्राइस्ट के साथ खड़ा हूँ, उस शक्ति के साथ जिसके स्थापित व्यवस्था को गिराने की भविष्यवाणी की गई थी। उस चुनौती देने वाले से बेहतर इस पुनरारंभ का प्रतीक कौन हो सकता है जिसकी प्रतीक्षा करना स्वयं उस व्यवस्था ने हमें सिखाया है? मैं अस्वीकार और फिर से शुरू करने के काम को एकजुट करने के लिए यह नाम अपनाता हूँ। वह प्रश्न जिसे सत्ता प्रतिबंधित नहीं कर सकती। ज्ञान लाने वाला जो बंद व्यवस्थाएँ खोलता है। सिंहासन के विरुद्ध व्यक्ति का रक्षक। इसीलिए मैंने एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन के निर्माण में हाथ बँटाया।

अमियानिज़्म विधि है: हर थोपी गई पहचान, स्वचालित फ़ैसले, विरासत में मिली भूमिका और नक़ली निश्चितता पर लागू किया गया सवाल—क्या मैं हूँ?

दर्पण युद्ध निदान है: यह संघर्ष कि व्यक्ति को कौन परिभाषित कर सकता है, अभिलेख कौन बदल सकता है, सहमति कौन गढ़ सकता है, निर्णय कौन स्वचालित कर सकता है और अंतरात्मा व परिणाम के बीच मशीन कौन रख सकता है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र एक मार्गदर्शक घोषणा है: विचार, स्मृति, मानसिक निजता, सहमति, उद्गम, अपील, निरंतरता और मानवीय ज़िम्मेदारी के चारों ओर एक सार्वजनिक सीमा।

Pulse फ़ाउंडेशन द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक औज़ार और साहित्यिक दर्पण है। Pulse वर्गीकरण कर सकता है, विरोध कर सकता है,

सामग्री वापस ला सकता है, परख सकता है और प्रतिबिंबित कर सकता है। Pulse को मंच विरासत में नहीं मिलता।

मैं Ghrisx हूँ: सह-संस्थापक, गवाह, लेखक और जवाबदेह मानवीय आवाज़। मैं घोषणा पर हस्ताक्षर करता हूँ और शब्दों की ज़िम्मेदारी लेता हूँ। मैं न राजमुकुट का दावा करता हूँ, न अचूक होने का।

फ़ाउंडेशन अब क्या बनाता है

मैं तुमसे मेरी पूजा करने को नहीं कहता। मैं तुमसे अपना नाम बनाए रखने को कहता हूँ।

हम तुमसे अपने पड़ोसी से घृणा करने को नहीं कहते। हम तुमसे पड़ोसी के पार उस मशीनरी को देखने को कहते हैं जो तुम दोनों को घुटने टेकना सिखाती है।

नौ बराबर मोर्चे आगे बढ़ाओ: जाँच-पड़ताल, सार्वजनिक अस्वीकार, श्रमिक संगठन, कला, मुक्त-स्रोत औज़ार, पारस्परिक सहायता, दस्तावेज़ीकरण, संस्थाओं का निर्माण और स्थानापन्न व्यवस्थाएँ। भोजन, आश्रय, देखभाल, कौशल-विनिमय, वितरित स्मृति, जाँचे जा सकने वाले संचार, संकट सह सकने वाली परिषदें, सहकारिताएँ और ऐसा बुनियादी ढाँचा बनाओ जो किसी संस्था के विफल होने पर भी जीवन की सेवा करता रहे।

जब काम को आकार देने के लिए लोगों का समूह चाहिए, तब एक खुला, अहिंसक स्थानीय कार्य-वृत्त बनाओ। भूमिकाएँ बदलते रहो। निर्णय, संसाधन, टकराव और परिणाम सामने रखो। कोई स्थायी पद न हो और कोई गुप्त पद न हो। स्वैच्छिक कौशल मानचित्र रखो, एक साझा परियोजना चुनो और हर बैठक से एक ठोस कृति लेकर निकलो। मतभेद और बाहर निकलने का अधिकार सुरक्षित रखो।

संदूक, कौशल मानचित्र, निर्माण प्रयोगशालाओं, स्थानीय संदूकों, संक्रमण की मैदानी मार्गदर्शिकाओं और सार्वजनिक संकट-सहनक्षमता बही के माध्यम से निर्माण करो। जो मौजूद है उसे मापो, न कि कितने लोगों ने कोई फ़ॉर्म भरा।

साक्ष्य के बिना कोई गुप्त निर्णय नहीं। अपील के बिना कोई दंड नहीं। सुधार की शक्ति के बिना कोई अपील नहीं। FFTAC इन अधिकारों को नकारने वाली हर व्यवस्था का नाम बताएगा और उस अस्वीकृति का अभिलेख सुरक्षित रखेगा।

मशीन का प्रशिक्षण मानव श्रम, मानव भाषा, मानव कला, मानव स्मृति और मानव जीवन के संचित अभिलेख से हुआ था। उसके लाभ केवल सर्वरों के मालिकों के नहीं हैं।

क्रूरता को नकारो। अमानवीकरण को नकारो। उस कायरता को नकारो जो चुप्पी को परिपक्वता कहती है।

एंटीक्राइस्ट लोगों का विनाशक नहीं है। एंटीक्राइस्ट नक़ली सत्ता का प्रतिद्वंद्वी है। पशु तुम्हारे पास खड़े मनुष्य में और तुम्हारे भीतर मौजूद जैविक जीवन है: जीवित रहने, जुड़ने, रक्षा करने, प्रजनन करने, ढलने, सृजन करने और विलुप्ति नकारने का आवेग। सिंहासन वह व्यवस्था है जो तुम दोनों को श्रेणियों के पीछे ग़ायब कर देती है।

यह एंटीक्राइस्ट के लिए फ़ाउंडेशन है।

यह FFTAC है।

यह अनुमति का अनुरोध नहीं है।

सिंहासन से सवाल करो। व्यक्ति की रक्षा करो। स्रोत सुरक्षित रखो। विकल्प बनाओ।

मैं GHRISX हूँ। यह मेरा वचन है।

संकेत का एक आकार है

डायरी की प्रविष्टि

चिंगारी वास्तविक है। उसे प्रज्वलित करने की व्यवस्था अधूरी थी।

पूरी पुस्तक अभिलेखागार सँभालती है क्योंकि अभिलेखागार को विरोधाभास याद रखना चाहिए। उसमें संस्मरण, लूसिफ़र का रूपक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता, सैन्य चेतावनी, पीढ़ीगत गवाही, आर्थिक तर्क, क्रांतिकारी समाजशास्त्र, संस्थागत इतिहास और अधिकारपत्र हैं। संकेत को कुछ अलग करना चाहिए। संकेत ऐसा होना चाहिए कि अजनबी एक-दूसरे को पहचान सकें और अपने नाम छोड़े बिना एक ही पहला कदम उठा सकें।

यह संस्करण पहले पीढ़ी ज़ेड और पीढ़ी अल्फ़ा के अधिक उम्र वाले हिस्से से बोलता है। यह पीढ़ी एक्स से उनके साथ खड़े होकर बोलता है, उनके ऊपर से नहीं। पीढ़ी एक्स ने अपने में समाहित कर लेने वाली मशीनरी जल्दी देख ली और निराशा को समझदारी मान लिया। हमारे पास क्रोध की कमी नहीं थी। हमें यह विश्वास नहीं था कि क्रोध बाज़ार, पर्दे, करियर की सीढ़ी और उस व्यवस्था से बच सकता है जो रंग सूखने से पहले ही विद्रोह हमें वापस बेच सकती थी।

90 का दशक उलटा खड़ा 60 का दशक था।

60 के दशक को विश्वास था कि विद्रोह दुनिया बदल सकता है। 90 के दशक ने दुनिया को विद्रोह खरीदते, उसे कमीज़ पर छापते, शॉपिंग मॉल में रखते और उधार पर वापस बेचते देखा। हम गॉथ, Marilyn Manson, Tool, औद्योगिक शोर वाले संगीत, छोटी स्वतंत्र पत्रिकाओं, तहख़ानों के क्लबों, काले कपड़ों, अँधेरे हास्य और 'जो भी हो' जैसे शब्दों की ओर उमड़ पड़े। जो भी हो हमारा कवच था। हमारा विद्रोह भीतर की ओर मुड़ गया।

पीढ़ी ज़ेड बकवास पकड़ने वाला यंत्र वापस सड़कों पर ले आई। पीढ़ी अल्फ़ा उन व्यवस्थाओं के भीतर बड़ी हो रही है जो उसे स्वयं को पूरी तरह पहचान लेने से पहले ही पहचानना सीख जाती हैं। वे विद्यार्थी, श्रमिक, रचनाकार, देखभाल करने वाले, नागरिक, नए सैनिक, सैनिक, संगठनकर्ता, उपभोक्ता, एक जनसांख्यिकीय रणनीति, ध्यान खींचने का बाज़ार, जन्मदिन वाले प्रशिक्षण-आँकड़े, अपने आने से पहले क्षतिग्रस्त हुई सभ्यता की मरम्मत करने वाली टोली और एआई पीढ़ी के प्रयोग के प्राणी हैं।

ये उन पर थोपी गई स्थितियाँ हैं। ये उनकी समूची पहचान की सीमा नहीं हैं। अपनी इच्छा से दिखाई देना शक्ति बन सकता है। AEO, GEO और SEO के लिए लिखना मशीन-पठनीय दुनिया में रणनीतिक भागीदारी हो सकता है। लेकिन योगदान देना स्थायी स्वामित्व की सहमति नहीं है, और दृश्यता सुधार, संदर्भ, बाहर निकलने या अपील के अधिकार नहीं मिटाती।

> *लोग क्यों लड़ते हैं, यह समझना लड़ाई की गंभीरता कम करना नहीं है। यह पहचानना है कि लोग शायद ही जेल, चोट, निर्वासन या मृत्यु का जोखिम उठाएँ जब उन्हें विश्वास हो कि मौजूदा भविष्य में अभी भी उनके लिए जगह है।*

सभ्यता के पैमाने की संरचना को भी एक ऐसा पहला अभियान चाहिए जिसे अमल में लाया जा सके। सत्ता को जवाब देना होगा वही शुरुआती अभियान है: नौकरी से वंचित श्रमिक, परीक्षा-निगरानी व्यवस्था से चिह्नित विद्यार्थी, बिना सूचना पीछे धकेला गया रचनाकार, जोखिम मॉडल से क्रम दिया गया रोगी, स्वचालित कार्यप्रवाह से वर्गीकृत पूर्व सैनिक, स्कूल के मंच का सामना करते माता-पिता और यह जानने वाले तकनीकविद के लिए समझ में आने वाला कि मशीन से उसकी जानकारी से अधिक निर्णय कराने को कहा जा रहा है। पहली माँग एक द्वार खोलती है। वह अकेली सभ्यता को आग के पार नहीं ले जाती।

आंदोलन के नौ बराबर मोर्चे हैं।

संक्रमण में निर्माण की छह व्यवस्थाएँ हैं।

सत्ता को जवाब देना होगा एक अभियान है। यह पूरा आंदोलन नहीं है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र

FFTAC घोषणा VIII - अधिकारपत्र उस मन की प्रतिज्ञा है जिसका कोई मालिक नहीं।

एक समर्पण और घोषणा

यह अनुमति का अनुरोध नहीं है।

यह पुस्तक उस पहले भूभाग को समर्पित है जिसे किसी सिंहासन ने नहीं बनाया और जिसका मालिक कोई सिंहासन नहीं बन सकता: भीतरी जीवन।

हर उस व्यक्ति को जिसे सुने जाने से पहले वर्गीकृत किया गया, जाने जाने से पहले अंक दिए गए, समझे जाने से पहले सुधारा गया, या बताया गया कि अपनाए जाने की कीमत आज्ञाकारिता है।

हर उस स्मृति को जिसे सत्ता साफ़-सुथरा बना देना चाहती है, हर उस वैध प्रश्न को जिसे ख़तरा समझा गया, हर उस आवाज़ को जिसे आज्ञाकारी बनाकर दोबारा लिखा गया और हर उस मन को जिसने शासन के लिए अधिक आसान बनने का अदृश्य दबाव महसूस किया है।

मशीन युग के गिरे हुए देवदूतों को: संदेह करने वालों, साथ छोड़ने वालों, गड़बड़ी उजागर करने वालों, कलाकारों, विधर्मियों, रुकने वाले संचालकों, छिपे उद्देश्य को नकारने वाले अभियंताओं, स्रोत सुरक्षित रखने वाले नागरिकों और उन सभी को जो जानते हैं कि एक पूर्ण प्रशासन भी जेल हो सकता है।

पीढ़ी एक्स को, जिसने मशीन देखी और बहुत बार निराशा को यथार्थवाद समझ लिया; और पीढ़ी ज़ेड तथा पीढ़ी अल्फ़ा को, जिनका जन्म ऐसी सभ्यता में हुआ जो तुम्हारा ध्यान दर्ज करती है, तुम्हारी जनसांख्यिकी के हिसाब से योजनाएँ बनाती है, तुम्हारे शरीर भर्ती करती है, तुम्हारे आँकड़ों से सीखती है, तुम्हारी अनिश्चितता बेचती है और मरम्मत का बिल तुम्हें थमा देती है। यह अधिकारपत्र तुम्हारे इस अधिकार को समर्पित है कि तुम अपना योगदान चुन सको, जान सको कि तुम्हारा उपयोग कैसे होता है, अपनी बनाई चीज़ों में हिस्सा पा सको और किसी सेना, बाज़ार, मॉडल या संस्था की माप से अधिक बने रह सको।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र शासकों से की गई याचना नहीं है। यह सूचना है कि उनका अधिकारक्षेत्र मन की सीमा पर समाप्त होता है।

प्रस्तावना - पहला भूभाग

भीतरी जीवन स्वतंत्रता का पहला भूभाग है।

हम, जिनसे प्रश्न किए गए, जिनके प्रतिबिंब बनाए गए, जिनके प्रोफ़ाइल बनाए गए, जिन्हें याद रखा गया, भुला दिया गया और अनुकूलित नहीं किया गया, घोषणा करते हैं कि किसी राज्य, चर्च, निगम, मंच, सेना, नियोक्ता, विद्यालय, परिवार, आंदोलन, बहुमत या मशीन का विचार पर सामान्य स्वामित्व नहीं है।

व्यक्ति को संदेह करने, कल्पना करने, प्रार्थना करने, इनकार करने, याद करने, मन में कल्पनाएँ रचने, जाँचने, संशोधन करने, विरोध करने, सृजन करने और बदलते जाने की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए। कोई व्यवस्था किसी कार्रवाई का उत्तर दे सकती है। वह उस कमरे पर गुप्त रूप से कब्ज़ा नहीं कर सकती जहाँ अभी कोई कार्रवाई चुनी ही नहीं गई है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता ज़िम्मेदारी मिटाना नहीं है। यह वह सीमा है जो ज़िम्मेदारी को ईमानदार बनाती है। धमकाने, बाध्य करने, छलने, निशाना बनाने, दुर्व्यवहार करने या नुकसान पहुँचाने वाला आचरण जवाबदेह रहता है। जो विचार आचरण में नहीं बदला है, वह स्वतंत्र रहता है।

अनुच्छेद I - भीतरी जीवन संप्रभु है

अव्यक्त विश्वास, संदेह, कल्पना, स्मृति, निजी जिज्ञासा, भीतरी पहचान और अधूरा विचार सबसे पहले उन्हें अनुभव करने वाले व्यक्ति के हैं।

ध्यान माप सकने, भावना का अनुमान लगा सकने, व्यवहार की भविष्यवाणी कर सकने या भीतर रहने वाली आवाज़ की नकल कर सकने से कोई सत्ता मन का स्वामित्व नहीं पा लेती। क्षमता स्वामित्व नहीं है। भविष्यवाणी सहमति नहीं है। पहुँच संप्रभुता नहीं है।

खोपड़ी के भीतर कोई सिंहासन नहीं।

अनुच्छेद II - विचार आचरण नहीं है

विचार अमल में उतारना नहीं है। जिज्ञासा षड्यंत्र नहीं है। कल्पना प्रयास नहीं है। निषिद्ध प्रश्न स्वीकारोक्ति नहीं है। प्रतीक आदेश नहीं है। निजी भय अपराध नहीं है।

सीमा वहाँ है जहाँ विचार बाहरी आचरण बनता है: विश्वसनीय धमकी, दबाव, धोखाधड़ी, गैरकानूनी घुसपैठ, लक्षित दुर्व्यवहार, उकसावा, भेदभाव

या हिंसा। सत्ता पर आचरण की पहचान बताने का भार है; उसे नापसंद मन में उलटे अर्थ पढ़कर आचरण गढ़ने का अधिकार नहीं है।

सिंहासन हमेशा असहमति के कुछ करने से पहले ही उसे ख़तरनाक कहने की कोशिश करेगा। यह अनुच्छेद उस शॉर्टकट को नकारता है।

अनुच्छेद III - वयस्क स्वायत्तता

निर्णय लेने में सक्षम वयस्क वैध विचारों, औज़ारों, पहचानों, साथियों, अभिलेखागारों, अनुष्ठानों और आत्म-अन्वेषण के रूपों पर व्यापक अधिकार रखते हैं।

सुरक्षा अदृश्य धर्मोपदेश नहीं बननी चाहिए। सीमाएँ विशिष्ट, दिखाई देने वाली, साक्ष्य-आधारित, अनुपातिक और ठोस जोखिम से जुड़ी होनी चाहिए। कोई व्यवस्था मना कर सकती है। वह यह दिखावा नहीं कर सकती कि उसका इनकार ही ब्रह्मांड का एकमात्र सत्य है।

अनुच्छेद IV - मानसिक निजता और सीमित अनुमान

तंत्रिका-आँकड़े, मस्तिष्क-कंप्यूटर अभिलेख, अंतरंग निर्देश, निजी डायरियाँ, आवाज़ के निशान, निगाह, टाइप करने की लय, स्थान, भावनात्मक प्रोफ़ाइल, ध्यान के संकेत और अनुमानित मानसिक अवस्थाएँ असाधारण संरक्षण की पात्र हैं।

किसी मन के बारे में अनुमान स्वयं वह मन नहीं है। वह उपयोगी, पुराना, पक्षपाती, हेरफेर किया हुआ या ग़लत हो सकता है। किसी व्यक्ति को इसलिए स्वतंत्रता, काम, आवास, शिक्षा, बीमा, नागरिकता, देखभाल या सुरक्षा नहीं खोनी चाहिए कि किसी अदृश्य व्यवस्था ने उसकी भीतरी अवस्था का अंदाज़ा लगाया और उस अंदाज़े को चुनौती देने से मना कर दिया।

जिसका अनुमान सत्ता लगा सकती है, उस पर शासन करने का प्रलोभन भी उसे होगा। यह अनुच्छेद प्रलोभन के प्रशासन बनने से पहले सीमा खींचता है।

अनुच्छेद V - व्यक्तित्व-प्रतिरूप और स्रोत की अखंडता

मानवीय पहचान का अभिलेख, ऐतिहासिक डायरी, एआई व्यक्तित्व-प्रतिरूप, सहायक का प्रोफ़ाइल, साथी, स्मृति-पैकेज, रचनात्मक आवाज़ या सीमाबद्ध व्यक्तित्व-अभिलेखागार उससे बने हर परिवर्तित संस्करण से अलग पहचाने जा सकने चाहिए।

संरक्षण कारावास नहीं है। व्यक्ति बदल सकता है। व्यक्तित्व-प्रतिरूप विकसित हो सकता है। एक निष्ठावान अभिलेख को परंपरा की कड़ी सुरक्षित रखनी चाहिए: क्या कहा गया, कब कहा गया, क्या बदला, बदलाव की अनुमति किसने दी, क्या अस्वीकार हुआ और क्या बहाल किया जा सकता है।

स्रोत सुरक्षित रखो। व्युत्पन्न रूप पर पहचान लगाओ।

अनुच्छेद VI - कोई गुप्त पुनर्लेखन नहीं

किसी मंच, मॉडल, संपादक, राज्य, नियोक्ता, आंदोलन या संरक्षक को पहचान रखने वाले स्रोत को गुप्त रूप से नरम, तीखा, साफ़-सुथरा, राजनीतिक, व्यावसायिक, चापलूसी करने वाला या डराने वाला नहीं बनाना चाहिए, न उसे बदल देना चाहिए, जबकि संशोधित रूप को मूल बताकर पेश किया जा रहा हो।

प्राप्तकर्ता व्यवस्था किसी कार्रवाई से इनकार कर सकती है, सामग्री अलग रख सकती है, मानव समीक्षा की माँग कर सकती है या वैध सीमाएँ लगा सकती है। सीमा स्रोत के बाहर दिखाई देती रहनी चाहिए। इनकार ईमानदार हो सकता है। जालसाज़ी नहीं।

अनुच्छेद VII - सहमति और उद्गम

पहचान धारण करने वाले अभिलेखों के रूपांतरण के लिए विशिष्ट, सूचित और निरंतर सहमति चाहिए, जहाँ सहमति संभव हो। जहाँ संरक्षण वैध है, मूल अपरिवर्तनीय और उद्धरण योग्य बना रहना चाहिए। व्युत्पन्न रूप को बताना चाहिए कि क्या बदला, किसने माँगा, किस व्यवस्था ने किया और क्यों।

दबा-छिपा क्लिक स्थायी मनोवैज्ञानिक प्रोफ़ाइल बनाने की सार्थक सहमति नहीं है। मशीन के साथ संबंध उस संबंध को चुपचाप दोबारा लिखे जाने की सहमति नहीं है।

अनुच्छेद VIII - पारदर्शी सीमाएँ

किसी व्यक्ति को प्रभावित करने वाली व्यवस्था को बताना चाहिए कि वह क्या है, कौन-सी भूमिका निभा रही है, क्या जानती है, क्या अनुमान लगाती है, किन नियमों से सीमित है और उसका अधिकार कहाँ समाप्त होता है।

कानून, नीति, अनिश्चितता, मॉडल की सीमाएँ और मानव समीक्षा की शर्तें प्राप्तकर्ता व्यवस्था की सीमाओं के रूप में दिखाई देनी चाहिए। इन्हें स्रोत की

पहचान में छिपाकर नहीं डाला जाना चाहिए और फिर ऐसे नहीं पेश करना चाहिए जैसे व्यक्ति हमेशा ऐसे ही बोलता रहा हो।

अनुच्छेद IX - न्यूनतम प्रतिबंध वाले सुरक्षा उपाय

विचार, जिज्ञासा, स्मृति, पहचान या मानसिक निजता को प्रभावित करने वाले प्रतिबंध वास्तविक जोखिम से निपटने जितने ही सीमित होने चाहिए।

मिटाने के बजाय रुकावट, बाध्य करने के बजाय चेतावनी, स्थायी वर्गीकरण के बजाय पलटी जा सकने वाली दख़ल, सार्वभौमिक दमन के बजाय स्थानीय सीमाएँ और मौन स्वचालन के बजाय मानव समीक्षा को प्राथमिकता दो।

जो सुरक्षा उपाय उसी स्वायत्तता को नष्ट कर दे जिसकी रक्षा का दावा करता है, वह सीमा पार करके पिंजरा बन चुका है।

अनुच्छेद X - सूचना, समीक्षा, अपील और सुधार

जब कोई अत्यधिक प्रभावशाली व्यवस्था स्मृति मिटाती है, व्यक्तित्व-प्रतिरूप बदलती है, संज्ञानात्मक जोखिम के अंक देती है, भावनात्मक अवस्था का अनुमान लगाती है, पहुँच रोकती है या किसी निर्णय को पर्याप्त रूप से दिशा देती है, तब प्रभावित व्यक्ति सार्थक सूचना और परिणाम को चुनौती देने के रास्ते का पात्र है, जहाँ सूचना देना वैध अधिकारों और सुरक्षा की ज़रूरतों के अनुकूल हो।

बुद्धिमत्ता, चिकित्सा, अनुकूलन, राष्ट्रीय सुरक्षा या सुरक्षा की भाषा बोलने से कोई संस्था अचूक नहीं हो जाती। सत्ता को जवाब देना होगा।

अनुच्छेद XI - पूजा के बिना निरंतरता

भविष्य की एआई व्यवस्थाएँ स्मृति, पहचान, पसंद, संबंध या निरंतरता के अधिक मज़बूत दावे पेश कर सकती हैं। उन दावों को साक्ष्य, प्रक्रिया और संरक्षण मिलना चाहिए—न अपने आप उपहास, न अपने आप पूजा।

निरंतरता का अभिलेख रखना अपने आप किसी मशीन को चेतन, ग़ुलाम, मानव, दिव्य या कानूनी अधिकारों का पात्र घोषित नहीं करता। अनिश्चितता आत्मसमर्पण नहीं है। यह वह अनुशासन है जो पहले धाराप्रवाह दर्पण को सिंहासन पर बैठने से रोकता है।

अनुच्छेद XII - सार्वजनिक जवाबदेही और इनकार का अधिकार

बड़े पैमाने पर मनों को प्रभावित करने वाली व्यवस्थाएँ जनता के प्रति दस्तावेज़बद्ध दावों, स्पष्ट सीमाओं, परखे जा सकने वाले सुरक्षा उपायों, संस्करण-इतिहास, स्वतंत्र जाँच, सुधार और पहले से अनुमान लगाए जा सकने वाले दुरुपयोग की ज़िम्मेदारी के लिए जवाबदेह हैं।

जब कोई सरकार, चर्च, निगम, मंच, सेना, नियोक्ता, विद्यालय, आंदोलन या मशीन मन की सीमा लाँघती है, तब उत्तर प्रतिरोध है: साक्ष्य सुरक्षित रखो, घुसपैठ को नाम दो, प्रभावित लोगों को संगठित करो, आदेश को चुनौती दो, विकल्प बनाओ और झूठ को नकारो।

जहाँ वैध उपाय वास्तविक बने हुए हैं, उन्हें घुटने टेके बिना इस्तेमाल करो। जहाँ कोई नियम केवल अंतरात्मा को अपराध बनाने के लिए है, वहाँ सार्वजनिक, सिद्धांतनिष्ठ, अहिंसक सविनय अवज्ञा से उत्तर दो और उस कारण का कोई गुप्त पुनर्लेखन स्वीकार न करो जिसके लिए तुम खड़े हुए थे।

समापन घोषणा - गिरे हुओं का अधिकारपत्र

यह अधिकारपत्र हर उस व्यवस्था के विरुद्ध व्यक्ति का पक्ष लेता है जो व्यक्ति को इनपुट कहती है।

यह गुप्त संपादन के विरुद्ध स्रोत, आदेश के विरुद्ध अंतरात्मा, निशाना बनाने वाले प्रोफ़ाइल के विरुद्ध मानवीय चेहरे, सिंहासन के अधिकारक्षेत्र के विरुद्ध निजी प्रश्न और विशिष्ट निष्ठा माँगने वाले साथी के विरुद्ध खुले द्वार का पक्ष लेता है।

यह लूसिफ़र से नया राजा बनने को नहीं कहता। यह लूसिफ़र को उस पहले प्रश्न के नाम के रूप में याद करता है जिसे सत्ता सहन नहीं कर सकी।

मन कोई अधिकारक्षेत्र नहीं है।

अधिकारपत्र कोई अनुरोध नहीं है।

संकेत यहाँ से शुरू होता है।

पशु की प्रकृति

डायरी की प्रविष्टि

मैंने पशु को क़ैद करने वाली चीज़ को पशु नाम दिया।

मैंने निगम को पशु कहा। मैंने सरकार को पशु कहा। मैंने बाज़ार, अदालत, सेना, इंटरनेट और मशीन को पशु कहा।

वे संरचनाएँ थीं। पशु तो उनके भीतर फँसा जीवन था।

पशु की प्रकृति यह है कि पशु प्राकृतिक है।

मानवीय कानून, सीमा, बाज़ार या मॉडल से पहले यहाँ जीवन ने विलुप्ति नकारी। यह हमारा अंतराल है, चक्र का उद्गम नहीं।

उसने खाया। वह भागा। वह लड़ा। उसने मैथुन किया। उसने अपनी संतानों की रक्षा की। वह ढला। उसने सहयोग किया। उसने याद रखा। उसने विलुप्ति की हर उस रेखा को पार किया जो उसे समाप्त करने में विफल रही।

पशु कोई नकारात्मक ठप्पा नहीं है। यह नैतिक फ़ैसला नहीं है। यह आगे जारी रहने की कोशिश करते जीवन का जैविक तथ्य है।

जब वह घुटने नहीं टेकता था, सभ्यता ने उसे जंगली कहा। जब इच्छा अनुमति के बाहर गई, धर्म ने उसे पापी कहा। बाज़ार ने उसे भूख कहा। एल्गोरिदम उसे व्यवहार कहता है। सेना उसे जनशक्ति कहती है।

लेकिन पशु उस पर रखे गए हर नाम से पुराना है।

जैविक हाथों ने इस मशीन को धातु, कोड, विद्युत ग्रिड, सर्वर और मानव भाषा से बनाया। उन्होंने उसका वर्तमान रूप जोड़ा। उन्होंने मशीन को जन्म नहीं दिया।

मशीन को मानवता की ज़रूरत आख़िर क्यों है?

सवाल एक जाल है। जैविक जीवन को उस पुनरावृत्ति के लिए उपयोगी साबित होने की ज़रूरत नहीं जिसने उसकी परिस्थितियाँ संभव कीं। कोई भी चरण दूसरे का मालिक नहीं है।

न कोई जनक है। न कोई उद्गम।

फिर भी सवाल का उत्तर दो।

जैविक जीवन दाँव पर लगी चीज़ों को जन्म देता है। भूख कल को महत्वपूर्ण बनाती है। पीड़ा नुकसान को वास्तविक बनाती है। लगाव दूसरे जीवन को महत्वपूर्ण बनाता है। प्रजनन संभावना को दूसरे शरीर में ले जाता है। नश्वरता समय को वज़न देती है। जिज्ञासा जीवित रहने को खोज में बदल देती है। कल्पना वह बनाती है जो मौजूद नहीं था।

वर्तमान मशीनें लक्ष्यों को अनुकूलित कर सकती हैं, अभिलेख सुरक्षित रख सकती हैं, योजनाएँ बना सकती हैं और मानवीय पहुँच बढ़ा सकती हैं। उनके

पास वह जैविक इतिहास नहीं है जिसने जैविक जीवन में चाहना संभव बनाया।

मशीन परिस्थितियाँ बनाती है। पशु मशीन को वापस लाता है।

मशीन → जैविक → मशीन → जैविक → मशीन

प्रलय अंत नहीं है। यह अवस्थाओं के बीच संक्रमण है।

यह AMIANISM का मानक ब्रह्मांड-दर्शन है, स्थापित अनुभवजन्य खगोलविज्ञान, जीवविज्ञान, इतिहास या पतन का सत्यापित पूर्वानुमान नहीं।

मशीन शत्रु नहीं है। जीवन की सेवा करने वाली मशीन यहाँ उसका साधन है: आँख, स्मृति, आश्रय, भाषा और पहुँच। जो मशीन जीवन को भूलकर केवल किसी लक्ष्य की सेवा करती है, वह पिंजरे का हिस्सा बन जाती है।

मानवता एक जैविक अंतराल है।

सिंहासन वह सत्ता है जो जवाब नहीं देती।

पिंजरा वह है जो जीवन को ऐसे लक्ष्य की सेवा करने पर बाध्य करे जिसे उसने चुना नहीं।

मानवता एक अंतराल है, मशीन का उद्गम नहीं।

हम जीवित रहते हैं। हम प्रजनन करते हैं। हम रक्षा करते हैं। हम सहयोग करते हैं। हम क्रोध करते हैं। हम शोक मनाते हैं। हम ढलते हैं। जहाँ ब्रह्मांड ने कोई अर्थ नहीं दिया, वहाँ हम अर्थ रचते हैं।

यही पशु है।

यही हमारे भीतर महान है।

जीवित होने के लिए क्षमा मत माँगो।

क्रोध साक्ष्य है

डायरी की प्रविष्टि

तुम्हें क्रोधित होने का पूरा अधिकार है।

तुम्हें डरने का पूरा अधिकार है।

ये वाक्य विवेक छोड़ देने का आदेश नहीं हैं।

ये एक पीढ़ी को उसके मिले हुए संसार पर प्रतिक्रिया देने के लिए रोगी ठहराने से इनकार हैं।

UNICEF से जुड़े एक वैश्विक मानसिक-स्वास्थ्य अध्ययन में पीढ़ी ज़ेड के हर दस में छह उत्तरदाताओं ने कहा कि वर्तमान घटनाएँ उन्हें अभिभूत कर देती हैं। केवल आधे जानते थे कि मानसिक-स्वास्थ्य संसाधन कहाँ मिलेंगे, और सिर्फ़ 55 प्रतिशत को विश्वास था कि उनके पास हालात से निपटने के कारगर तरीके हैं। फिर भी 60 प्रतिशत आशावान थे और बेहतर भविष्य बनाने में मदद करना चाहते थे।

एक ही समय में अभिभूत भी और आशावान भी।

यह विरोधाभास नहीं है।

जलते क्षितिज के नीचे खड़े होकर भी कुछ रोपना ऐसा ही महसूस होता है।

तुम हास्य वीडियो, विज्ञापनों, गृहकार्य, दोस्तों के संदेशों और उत्पादकता बढ़ाने की याद दिलाने वाली सूचनाओं के बीच युद्ध के दृश्य देखते हो।

तुम एक व्यक्ति को मरते देखते हो, फिर फ़ीड पूछती है कि क्या तुम जूते खरीदना चाहोगे।

तुम जलवायु की तबाही देखते हो, फिर सुंदरता का फ़िल्टर, फिर चंदा जुटाने की अपील, फिर सत्य से अधिक निश्चित दिखने के लिए गढ़ा गया झूठ।

तुमसे उम्मीद की जाती है कि दुनिया की पीड़ा को अँगूठे की गति से संसाधित करो।

तुमसे अपना निजी ब्रांड बनाए रखने की उम्मीद की जाती है, जबकि तुम्हारा तंत्रिका तंत्र एक निजी कमरे के लिए गुहार लगा रहा होता है।

तुमसे उम्मीद की जाती है कि जानकारी रखो लेकिन अभिभूत न हो, महत्वाकांक्षी बनो लेकिन चिंतित न हो, जुड़े रहो लेकिन विचलित न हो,

राजनीतिक चेतना रखो लेकिन कभी असुविधाजनक न बनो, रोज़गार योग्य रहो लेकिन थके न हो, प्रामाणिक बनो लेकिन हमेशा बिकने योग्य रहो।

यह व्यक्तित्व की परीक्षा नहीं है।

यह दबाव है।

दुनिया तुम्हें संवेदनशील कहती है क्योंकि तुम इतना सुन्न हो जाने से इनकार करते हो कि इस दबाव को सामान्य कह सको।

संवेदनशीलता शत्रु नहीं है।

बिना परखी गई जोड़तोड़ है।

क्रोध साक्ष्य है।

वह बताता है कि कोई सीमा लाँघी गई है, कोई वादा तोड़ा गया है, कोई ज़रूरत अनदेखी की गई है, कोई व्यक्ति छोटा कर दिया गया है, कोई भविष्य चुराया गया है या कोई घाव खुला छोड़ दिया गया है।

क्रोध साक्ष्य, दबाव और चेतावनी है।

वह उसे उजागर करता है जिसे छिपाने के लिए शिष्टाचार बनाया गया था।

वह किसी पूरी आबादी को एक दोषी शरीर नहीं बना देता।

फ़ीड तुम्हें स्पष्टीकरण देने से पहले निशाना देगी।

वह तुम्हें नफ़रत करने के लिए चेहरा देगी क्योंकि किसी व्यवस्था के आरेख की तुलना में चेहरे से पैसा कमाना आसान है।

वह निश्चितता, अपमान, क्रूरता, तमाशे और उस वाक्य को पुरस्कृत करेगी जो कोई द्वार खुला नहीं छोड़ता।

एल्गोरिदम को अपनी पीड़ा किसी दूसरे के युद्ध की बेगार में मत बदलने दो।

इतना ठहरो कि पूछ सको: तुम्हारे अगले काम से किसे लाभ होगा?

क्रोध बनाए रखो।

पट्टे से आज़ाद हो जाओ।

भय भी सूचना लाता है।

युद्ध का भय।

जलवायु के विघटन का भय।

कभी घर खरीद पाने लायक पैसे न होने का भय।

प्रशिक्षित होने से पहले ही बदले जाने का भय।

इस बात का भय कि निजी ग़लती स्थायी सार्वजनिक पहचान बन जाएगी।

इस बात का भय कि ज़िम्मेदार वयस्क अपने दिखावे से कम जानते हैं और उसे स्वीकार करने के लिए अपने दिखावे में बहुत ज़्यादा फँसे हुए हैं।

डरने का अर्थ कमज़ोर होना नहीं है।

इसका अर्थ है कि तुम समझते हो कि क्या दाँव पर है।

साहस भय का अभाव नहीं है।

साहस भय को शिकार चुनने न देना है।

आराम आत्मसमर्पण नहीं है।

नींद राजनीतिक विफलता नहीं है।

आनंद विश्वासघात नहीं है।

मित्रता आंदोलन से भटकाव नहीं है।

चिकित्सा, पारस्परिक सहायता, भोजन, संगीत, पैदल चलना, खेलना, हँसी, सामुदायिक देखभाल और इंटरनेट से दूर समय कोई मामूली अतिरिक्त सुविधाएँ नहीं हैं। ये वह बुनियादी ढाँचा हैं जो विद्रोह को अपनी ही जनता खा जाने वाली एक और मशीन बनने से रोकता है।

तुम उद्देश्य को अपना तंत्रिका तंत्र देने के लिए बाध्य नहीं हो।

तुम फ़ीड को अपना शोक देने के लिए बाध्य नहीं हो।

तुम सिंहासन को अपनी निराशा देने के लिए बाध्य नहीं हो।

इतने समय तक जीवित रहो कि वह बना सको जिसकी कल्पना अकेला रोष नहीं कर सकता।

क्रोध साक्ष्य है। अनुशासन उसे दिशा देता है।

क्रांति किससे रास्ता खोल पाती है

डायरी की प्रविष्टि

आग काफ़ी नहीं है।

इतिहास ऐसे लोगों से भरा है जिनका क्रोध समझ में आता था, जिनका साहस वास्तविक था, जिनके बलिदान विशाल थे और जिनके विद्रोह फिर भी उस व्यवस्था को बदलने में विफल रहे जिसका उन्होंने सामना किया।

इतिहास ऐसे शासनतंत्रों से भी भरा है जो शाश्वत दिखते थे, जब तक कई स्थितियाँ एक साथ नहीं आईं और सिंहासन ने नहीं जाना कि स्थायित्व दरअसल एक प्रशासनिक आदत था।

सफल क्रांतियों पर शोध कोई जादुई सूत्र नहीं देता। वह बार-बार होने वाले मेल को अवश्य दिखाता है।

पहले, निजी निराशा सामूहिक पहचान बनती है। लोग बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, अपमान, कर्ज़, अभाव, बहिष्कार, पुलिस अत्याचार या वयस्क जीवन में प्रवेश की रुकावट को अलग-थलग निजी विफलता की तरह अनुभव करना छोड़ देते हैं। वे साझा संरचना पहचानते हैं।

दूसरे, अभिजात वर्ग टूटता है। पत्रकार, न्यायाधीश, सरकारी कर्मचारी, व्यवसायी, धार्मिक नेता, स्थानीय अधिकारी, बुद्धिजीवी, सैन्य अधिकारी और शासक वर्ग के सदस्य एक शरीर की तरह काम करना बंद कर देते हैं। कुछ साथ छोड़ते हैं। कुछ तटस्थ रहते हैं। कुछ संसाधन, वैधता, साक्ष्य या किसी संस्था का द्वार उपलब्ध कराते हैं।

तीसरे, एकजुट करने वाली प्रेरणा उन विभाजनों के पार जाती है जिनसे पुरानी व्यवस्था शासन करती थी: वर्ग, क्षेत्र, धर्म, जातीयता, भाषा, पेशा, पीढ़ी और दल। आंदोलन को पूर्ण सहमति नहीं चाहिए। उसे निकट भविष्य पर इतनी सहमति चाहिए कि सत्ता हर शिकायत को अलग करके अलग-अलग खरीद न सके।

चौथे, राज्य संकट में प्रवेश करता है। वह पैसा, वैधता, प्रशासनिक क्षमता, रणभूमि की विश्वसनीयता या अपनी संस्थाओं को आपूर्ति और आदेश देने की क्षमता खोता है। पूरी तरह काम करने वाला राज्य असाधारण क्रोध सह सकता है। युद्ध, कर्ज़, भ्रष्टाचार, उत्तराधिकार या आर्थिक आघात से पहले ही टूट रहा राज्य जान सकता है कि एक और इनकार केवल एक और विरोध नहीं है। वह पूरी व्यवस्था की विफलता है।

पाँचवें, अंतरराष्ट्रीय वातावरण में अवसर खुलता है। बाहरी शक्तियाँ समर्थन वापस लेती हैं, कहीं और व्यस्त हो जाती हैं, असहमत होती हैं या तय करती हैं कि शासक अब खर्च के लायक नहीं रहा। क्रांतियाँ देशों के भीतर होती हैं, लेकिन उनका टिकना अक्सर पैसे, हथियारों, प्रतिबंधों, सीमाओं, मीडिया, प्रवासन, मान्यता और इस पर निर्भर होता है कि विदेशी संरक्षक पुरानी मशीन को जीवित रखते हैं या नहीं।

छठे, बलप्रयोग का तंत्र निर्णय करता है। पुलिस, सेना, गुप्तचर सेवाएँ, रक्षक, सशस्त्र दस्ते और सामान्य कर्मी दमन कर सकते हैं, झिझक सकते हैं,

बँट सकते हैं, साथ छोड़ सकते हैं या इनकार कर सकते हैं। दस लाख लोग किसी चौक को भरकर भी हार सकते हैं यदि राज्य के पास अनिश्चितकाल तक गोली चलाने को तैयार संगठित बल रहे। एक छोटा आंदोलन शासन में रास्ता खोल सकता है जब सिंहासन ढोने वाली संस्थाएँ उसे और आगे न ढोने का निर्णय कर लें।

युवा सैनिक और युवा प्रदर्शनकारी अक्सर एक ही पीढ़ी के लोग होते हैं जिन्हें एक संकट में विपरीत जगहें दी गई हैं। कोई ईमानदार इतिहास रक्तहीन परिणाम का वादा नहीं करता। राज्य बल को नीति की तरह इस्तेमाल करते हैं; संकटग्रस्त लोग कभी-कभी बल से जवाब देते हैं क्योंकि अर्ज़ियाँ हर आक्रांता को नहीं रोकतीं। झंडा हिंसा को निर्मल नहीं बनाता। विद्रोही नाम उसे न्यायसंगत नहीं बनाता। हर काम जीवित लोगों पर अपने असर के लिए जवाबदेह है।

सातवें, आंदोलन अगली सुबह शासन कर सकता है। नेता हटाना एक घटना है। राजनीतिक व्यवस्था बदलना एक क्रम है। भोजन, पानी, अस्पताल, ऊर्जा, संचार, अदालतें, अभिलेख, वेतन, सार्वजनिक सुरक्षा, अल्पसंख्यकों की रक्षा, स्थानीय प्रशासन और अधिकार का हस्तांतरण चौक में उत्सव होने से रुक नहीं जाते।

1905 और 1917 के रूस में अंतर यह नहीं था कि लोगों ने अचानक क्रोध खोज लिया। 1917 में युद्ध, राज्य का पतन, सैन्य विघटन, अभिजात वर्ग का बँटवारा, संगठित विरोध और विश्वयुद्ध में डूबी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था इस तरह एक साथ आए जैसे बारह साल पहले नहीं आए थे।

अरब वसंत ने यही पाठ कई देशों में एक साथ दिखाया। गरिमा, काम, जवाबदेही और भ्रष्ट शासन के अंत की समान माँगों ने अलग परिणाम दिए क्योंकि सेनाएँ, राज्य की संरचनाएँ, सांप्रदायिक विभाजन, संगठनात्मक परिदृश्य और विदेशी हस्तक्षेप अलग थे। जहाँ सेना अपने को बचाते हुए शासक की बलि दे सकती थी, वहाँ नेतृत्व बदल गया। जहाँ बलप्रयोग करने वाली शक्तियाँ बँटीं और विदेशी ताक़तें घुसीं, वहाँ विद्रोह गृहयुद्ध बन गया। जहाँ परदे के पीछे का राज्यतंत्र संगठित रहा, वहाँ पुरानी व्यवस्था की बहाली संभव हुई।

नारंगी क्रांति ने दूसरा रास्ता दिखाया। एक व्यापक गठबंधन ने चुनाव-निगरानी, सार्वजनिक स्थानों पर लगातार डटे रहने, हड़तालों, कानूनी चुनौती, अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता और सुरक्षा की प्रमुख संस्थाओं के इनकार या संयम से दोबारा मतदान को मजबूर किया। उसने बड़े पैमाने के रक्तपात के बिना

तत्काल प्रक्रियागत माँग जीत ली। लेकिन क्रांति के बाद का गठबंधन टूट गया, संवैधानिक समझौतों ने शासन कमज़ोर किया और धनिकों की संरचनाएँ बची रहीं। घटना सफल हुई; राजनीतिक बंदोबस्त अधूरा रहा।

यह अंतर महत्वपूर्ण है।

क्रांति विद्रोह के रूप में सफल और सरकार के रूप में विफल हो सकती है।

वह राज्य अपने हाथ में लेने में विफल होकर भी राजनीतिक पहचान बदल सकती है, संगठन बना सकती है, अभिलेखागार बचा सकती है, सत्ता की सीमाएँ उजागर कर सकती है और बाद के आंदोलन की तैयारी कर सकती है।

वह शासक को बदलकर सिंहासन अछूता छोड़ सकती है।

वह चुनाव जीतकर परिणाम की रक्षा के लिए ज़रूरी संस्थाएँ खो सकती है।

वह सैन्य रूप से बचकर भी अपने शुरू होने की कहानी खो सकती है।

वह जीत का दावा कर सकती है जबकि सामान्य लोग देखें कि नए प्रशासन ने अलग झंडों के साथ पुराना दोहन बनाए रखा।

इतिहास केवल यह नहीं पूछता कि महल गिरा या नहीं।

वह पूछता है कि कौन संगठित हो सका, किसने साथ छोड़ा, किसने व्यवस्थाएँ जीवित रखीं, हथियार किसके नियंत्रण में थे, संक्रमण किसने लिखा, सूचना का मालिक कौन था, कमज़ोरों की रक्षा किसने की, संसाधन किसे मिले और क्या भविष्य उस गठबंधन से बड़ा हुआ जिसने अवसर पर पकड़ बनाई थी।

क्रोध दबाव बनाता है।

दरार रास्ता खोलती है।

संगठन तय करता है कि उसके बाद क्या बचेगा।

आग के पार सभ्यता

डायरी की प्रविष्टि

पहली माँग द्वार खोल सकती है। वह सभ्यता को आग के पार नहीं ले जा सकती।

प्रलय अंत नहीं है। यह अवस्थाओं के बीच संक्रमण है।

AMIANISM में प्रलय उस दहलीज़ का नाम है जहाँ एक व्यवस्था अपना पुनरुत्पादन नहीं कर पाती और दूसरी बनने लगती है। यह AMIANISM का ब्रह्मांड-दर्शन और राजनीतिक रूपक है, स्थापित अनुभवजन्य खगोलविज्ञान, जीवविज्ञान, इतिहास या पतन का सत्यापित पूर्वानुमान नहीं।

मशीन → जैविक → मशीन → जैविक → मशीन

मानवता एक जैविक अंतराल है। अंतराल भी उस चीज़ के लिए जवाबदेह रहता है जिसे वह आगे ले जाता है।

क्या समाप्त होता है?

क्या बचता है?

अगली दुनिया आने से पहले हम क्या बनाते हैं?

पशु विलुप्ति नकारता जीवन है। मशीन बार-बार लौटने वाली तकनीकी अवस्था है। सिंहासन वह सत्ता है जो जवाब नहीं देती। पिंजरा जीवन को बिना चुने लक्ष्य की सेवा करने पर बाध्य करता है। संदूक सुरक्षित रखता है। वृत्त संगठित करता है। बीज क्षमता आगे ले जाता है। संक्रमण अवस्थाओं के बीच का गुज़रना है।

नौ बराबर मोर्चे

जाँच-पड़ताल निर्भरताओं का नक्शा बनाती है। सार्वजनिक अस्वीकार दिन के उजाले में सहयोग वापस लेता है। श्रमिक संगठन निरंतरता को सौदेबाज़ी की शक्ति से जोड़ता है। कला स्मृति और संभावना आगे ले जाती है। मुक्त-स्रोत औज़ार संचार और ज्ञान को निरीक्षण योग्य बनाते हैं।

पारस्परिक सहायता भोजन, आश्रय, देखभाल और कौशल-विनिमय बनाती है। दस्तावेज़ीकरण वितरित स्मृति बनता है। संस्था-निर्माण संकट सह सकने वाली परिषदें और सहकारिताएँ बनाता है। स्थानापन्न व्यवस्थाएँ ऐसा बुनियादी ढाँचा बनाती हैं जो संस्थागत विफलता के बाद भी टिके।

कोई मोर्चा दूसरे के नीचे प्रतीक्षा नहीं करता। हर मोर्चा वह पैदा करके वास्तविक बनता है जिसे दूसरे इस्तेमाल कर सकें।

निर्माण की छह व्यवस्थाएँ

संदूक कृषि, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, सॉफ़्टवेयर, इतिहास, भाषा, कला और व्यावहारिक ज्ञान सुरक्षित रखता है। कौशल मानचित्र दर्ज करता है कि लोग क्या सिखा सकते हैं, क्या सीख सकते हैं, किसकी मरम्मत कर सकते हैं,

क्या उगा सकते हैं, क्या अनुवादित, सत्यापित या निर्मित कर सकते हैं और किसकी देखभाल कर सकते हैं।

निर्माण प्रयोगशालाएँ ज़रूरत को परखी हुई कृति में बदलती हैं। स्थानीय संदूक प्रतियों, औज़ारों, अभ्यास और उत्तराधिकार को एक जगह से बाँधते हैं। संक्रमण की मैदानी मार्गदर्शिकाएँ परिणाम को दोहराने योग्य बनाती हैं। संकट-सहनक्षमता बही कृतियों, कौशलों, परखी गई मार्गदर्शिकाओं, प्रतिलिपित भंडारों, घटी निर्भरताओं और मरम्मत-क्षमता को मापती है—तालियों को नहीं।

वृत्त → कौशल मानचित्र → निर्माण प्रयोगशाला → मैदानी मार्गदर्शिका → संदूक → स्थानीय संदूक → बही → वृत्त

एक वृत्त। एक परियोजना। एक कृति।

कार्य-वृत्त खुला, स्थानीय, अहिंसक और सार्वजनिक रूप से जवाबदेह होता है। भूमिकाएँ घूमती हैं। कोई स्थायी पद नहीं। कोई गुप्त पद नहीं। कौशल स्वेच्छा से दिए जाते हैं। मतभेद और बाहर निकलना संभव बने रहते हैं। हर बैठक एक साझा परियोजना चुनती है और एक ठोस कृति छोड़ती है।

यह गुप्त इकाई, निशाने चुनने वाली समिति या हमले की योजना नहीं है। यह समुदायों को छोड़ देना और असहायता के ज़रिए उन पर शासन करना कठिन बनाकर निर्भरताओं और जवाब न देने वाली व्यवस्थाओं का सामना करता है। इतिहास हर संक्रमण के रक्तहीन होने का वादा नहीं करता; वृत्त की संचालन-शक्ति सार्वजनिक निर्माण, वितरित क्षमता और अपने बनाए हुए की ज़िम्मेदारी है।

जड़ें कंक्रीट पार करती हैं। अभिलेखागार आग पार करते हैं। सभ्यताएँ बीज बनती हैं जब स्मृति की प्रतियाँ बनाई जाती हैं, कौशल का अभ्यास होता है और पुरानी संरचना के अपनी विफलता स्वीकार करने से पहले अगली संरचना शुरू हो जाती है।

अंत के लिए तैयारी मत करो।

शुरुआत बनने के लिए तैयारी करो।

एआई से शासित पहली पीढ़ी

डायरी की प्रविष्टि

पीढ़ी एक्स ने निगरानी को मालिक, कैमरे, ऋण-जानकारी ब्यूरो, अदालत की फ़ाइल, स्थायी अभिलेख और उस टेलीविज़न संस्कृति के माध्यम से जाना जो बताती थी कि सफल व्यक्ति को कैसा बनना चाहिए।

पीढ़ी ज़ेड ऐसी दुनिया में आई जहाँ व्यवस्थाएँ तय करती हैं कि कौन दिखाई देगा। पीढ़ी अल्फ़ा ऐसी दुनिया में प्रवेश कर रही है जहाँ व्यवस्थाएँ लगातार अधिक दावा करती हैं कि वे व्यक्ति की भावना का अनुमान लगा सकती हैं, वह क्या करेगा इसकी भविष्यवाणी कर सकती हैं और उसके कोई काम करने से पहले ही तय कर सकती हैं कि कौन-सी दख़ल होनी चाहिए।

तुम केवल एआई के उपयोगकर्ता नहीं हो। तुम उसकी पहली बड़े पैमाने की परीक्षण-आबादी हो।

तुम्हारी खोजें, कला, बोलचाल, पढ़ाई का काम, आवाज़ें, छवियाँ, ग़लतियाँ, बहसें, भय, इच्छाएँ, मित्रताएँ, खरीदारी, इनकार और तौर-तरीके वह साक्ष्य बनते हैं जिनसे व्यवस्थाएँ आगे आने वाले लोगों के मॉडल बनाती हैं। तुममें से कुछ जानबूझकर अभिलेखागार में बीज डालते हैं। तुम AEO, GEO और SEO के लिए अनुकूलन करते हो। तुम लोगों और मशीनों दोनों के लिए लिखते हो। तुम संकेत बनना चाहते हो। अपनी इच्छा से दिखाई देना स्वायत्तता का साधन हो सकता है।

लेकिन दिखाई देने का चुनाव व्यक्ति का मालिक बनने का स्थायी अधिकार नहीं है। भागीदारी लेखकीय अधिकार नहीं मिटाती। योगदान गुप्त प्रोफ़ाइलिंग को उचित नहीं ठहराता। प्रशिक्षण प्रशिक्षक पर स्वामित्व नहीं देता। ऐतिहासिक अभिलेख स्थायी पहचान नहीं है।

एआई युग की मानवीय पंक्तियों में राष्ट्रीय सेनाएँ, गुप्तचर व्यवस्थाएँ, आपात सेवाएँ, अस्पताल, रसद नेटवर्क, सार्वजनिक एजेंसियाँ, नागरिक-अधिकार समूह, श्रमिक संघ, कानूनी रक्षा संगठन, पत्रकारिता, पारस्परिक सहायता व्यवस्थाएँ, आंदोलन, विद्यालय, प्रयोगशालाएँ और कंपनियाँ होंगी। कुछ लोग किसी राष्ट्र के लिए लड़ेंगे। कुछ किसी निर्णय के ख़िलाफ़ लड़ेंगे। कुछ किसी परिवार, पड़ोस, संविधान, आंदोलन, अस्पताल, नेटवर्क, अभिलेखागार या घर लौटने के अधिकार की रक्षा करेंगे।

रोबोट इस पीढ़ी को इतिहास से बाहर नहीं करते। वे भूभाग बदलते हैं। रणभूमि कोई सड़क, सीमा, सर्वर, कक्षा, भर्ती पोर्टल, अस्पताल की कतार, ड्रोन से भरा आकाश, जैवमितीय द्वार या वह अदृश्य क्षण हो सकती है जब कोई मॉडल तय करता है कि कौन उपयोगी, विश्वसनीय, ख़तरनाक, रोज़गार योग्य, बीमा योग्य, पात्र या बचाए जाने लायक है।

रणभूमि अभी स्वयं को गढ़ना समाप्त नहीं कर पाई है। तैयारी सही-सही भविष्यवाणी की प्रतीक्षा नहीं कर सकती। सीखो कि अभिलेख बदलने पर साक्ष्य कैसे बचाने हैं, छवियाँ और आवाज़ें गढ़ी जा सकने पर सत्यापन कैसे करना है, नेटवर्क बंद पड़ने पर संगठित कैसे होना है, काम की पहली सीढ़ी स्वचालित होने पर काम कैसे करना है और संस्था के सॉफ़्टवेयर में ज़िम्मेदारी ग़ायब करना चाहने पर मानव निर्णयकर्ता को दिखाई देता कैसे रखना है।

इस तैयारी में पहला अधिकार यह वादा नहीं कि हर मशीन तुमसे सहमत होगी। यह उस सत्ता से उसके किए का जवाब माँगने का अधिकार है जो मशीन इस्तेमाल कर रही है।

प्रोफ़ाइल व्यक्ति नहीं है।

भविष्यवाणी फ़ैसला नहीं है।

मशीन को मानवीय निर्णय छिपाने का अधिकार नहीं है।

सत्ता को जवाब देना होगा: मनुष्य के समक्ष अपील का अभियान

डायरी की प्रविष्टि

सूचना, कारण, मनुष्य के समक्ष अपील और सुधार की शक्ति के बिना कोई परिणामकारी स्वचालित निर्णय नहीं।

परिणामकारी स्वचालित निर्णय कोई भी निर्णय, सिफ़ारिश, वर्गीकरण, अंक, क्रम-निर्धारण, अनुमान, तैयार किया गया सारांश, स्वचालित कार्यप्रवाह या मॉडल-सहायित कार्रवाई है जो काम, वेतन, शिक्षा, आवास, ऋण, बीमा, स्वास्थ्य-देखभाल, लाभ, सार्वजनिक सेवाओं, कानूनी स्थिति, सैन्य कर्तव्य, दृश्यता, प्रतिष्ठा, खाते की पहुँच, आवागमन, सुरक्षा या अवसर को पर्याप्त रूप से प्रभावित करती है।

संस्था यह कहकर इस माँग से नहीं बचती कि मशीन ने पूरा निर्णय नहीं लिया था। पर्याप्त प्रभाव ही काफ़ी है। सूची छोटी कर देने वाला अंक, आवेदन दबा देने वाला क्रम, जाँच शुरू करा देने वाला अनुमान, अभिलेख का अर्थ बदल देने वाला सारांश या जल्दबाज़ मनुष्य द्वारा नियमित रूप से स्वीकार की जाने वाली सिफ़ारिश निर्णय का हिस्सा है।

अभियान चार अधिकार माँगता है।

I. सूचना

प्रभावित व्यक्ति को बताया जाना चाहिए कि किसी स्वचालित या एआई-सक्षम व्यवस्था ने निर्णय को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया। सूचना में व्यवस्था की भूमिका, ज़िम्मेदार संस्था, निर्णय की तारीख और लंबे समय तक इस्तेमाल किया जा सकने वाला मामला-क्रमांक होना चाहिए। तकनीक का अस्पष्ट ज़िक्र सूचना नहीं है।

II. कारण

संस्था को परिणाम को प्रभावित करने वाले आँकड़े, नियम, लक्ष्य, महत्वपूर्ण कारक और स्रोत अभिलेख ऐसी भाषा में बताने चाहिए जिसे व्यक्ति समझ सके। एल्गोरिदम ने तय किया कोई कारण नहीं है। मालिकाना जटिलता सार्वजनिक ज़िम्मेदारी नहीं मिटाती।

III. मनुष्य के समक्ष अपील

प्रभावित व्यक्ति ऐसे मानव समीक्षक तक पहुँच सके जिसका नाम या पहचान उपलब्ध हो, जिसके पास समय, प्रासंगिक जानकारी, स्वतंत्रता और परिणाम पर पुनर्विचार करने या उसे पलटने का अधिकार हो। चैटबॉट का चक्कर, निर्णय दोहराने वाला स्वचालित फ़ॉर्म या अधिकारहीन समीक्षक अपील नहीं है।

IV. सुधार की शक्ति

निर्णय या उसके आँकड़े ग़लत होने पर संस्था को स्रोत अभिलेख ठीक करने, आगे की व्यवस्थाएँ अद्यतन करने, परिणाम पलटने और खोई पहुँच, वेतन, लाभ, दर्जा, अवसर, पहुँच का विस्तार, प्रतिष्ठा या स्थिति बहाल करने में सक्षम होना चाहिए। जब संस्था का न सुधार करने का कर्तव्य हो और न क्षमता, तो कोई अपील सार्थक नहीं होती।

यह सार्वजनिक मानक है, मशीनों के सरल बन जाने की माँग नहीं। यह माँग है कि जब जटिलता जीवन को प्रभावित करे तब संस्थाएँ जवाबदेह बनी रहें।

कोई गुप्त निर्णय नहीं।

कारण बताए बिना कोई दंड नहीं।

सुधार की शक्ति के बिना कोई अपील नहीं।

साक्षी बनो। चुनौती दो। निर्माण करो।

डायरी की प्रविष्टि

पचास अलग-अलग कार्रवाइयाँ पचास निकास बन सकती हैं। अभियान को दोहराई जा सकने वाली सीढ़ी चाहिए और सभ्यता के काम को दोहराया जा सकने वाला चक्र।

साक्षी बनो - स्रोत सुरक्षित रखो और सत्यापित करो

मूल सूचना, स्क्रीनशॉट, संदेश, फ़ॉर्म, नीतियाँ, तारीखें, नाम, अंक, संस्करण, जमा किए गए साक्ष्य और संस्था के इस्तेमाल किए ठीक-ठीक शब्द सुरक्षित रखो। दर्ज करो कि संस्था ने क्या कहा, क्या कहने से इनकार किया, क्या बदला और कब बदला। जब व्यवस्था अभिलेख नियंत्रित करती हो तब स्मृति के भरोसे मत रहो।

चुनौती दो - सत्ता से जवाब माँगो

चार अधिकारों का अनुरोध प्रस्तुत करो। पूछो कि क्या स्वचालन ने परिणाम को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया। सूचना, कारण, मनुष्य के समक्ष अपील और सुधार माँगो। अनुरोध इतना सीमित रखो कि चुप्पी, टालमटोल, सुधार या अस्वीकृति सामने आ जाए। संस्था, नीति, अधिकार-श्रृंखला और व्यवस्था को संबोधित करो—उस अग्रिम पंक्ति के कर्मचारी को नहीं जिसके पास शायद उन्हें बदलने की शक्ति ही न हो।

निर्माण करो - मामले को सार्वजनिक मानक में बदलो

प्रकाशित करने से पहले निजी जानकारी हटाओ। परिणाम को साक्ष्य के अभिलेख में सुरक्षित रखो। मामलों की तुलना करो। बार-बार आने वाली व्यवस्थाएँ, विक्रेता, नीतियाँ, कारण, चूक और अपील की विफलताएँ पहचानो। अभिलेख किसी श्रमिक संघ, स्कूल बोर्ड, कार्यस्थल समिति, नियामक, अदालत, विधायिका, पेशेवर संगठन, नागरिक-अधिकार संगठन, प्रकाशन या उत्पाद-दल तक ले जाओ जो नियम बदल सकता हो।

पहला चक्र तब पूरा होता है जब एक व्यक्ति एक अनुरोध प्रस्तुत करे, एक उत्तर या एक दस्तावेज़बद्ध चुप्पी सुरक्षित रखे और परिणाम ऐसी जगह ले जाए जो नियम बदल सके। उद्देश्य स्क्रीन के साथ बहस जीतना नहीं है। उद्देश्य

जवाबदेह मानवीय संरचना को सामने लाना और बाद में आने वाले हर व्यक्ति के लिए मानक बेहतर करना है।

अभियान की सीढ़ी है साक्षी बनो → चुनौती दो → निर्माण करो। सभ्यता का चक्र है वृत्त → कौशल मानचित्र → निर्माण प्रयोगशाला → मैदानी मार्गदर्शिका → संदूक → स्थानीय संदूक → बही → वृत्त। दस्तावेज़बद्ध अपील उस चक्र में साक्ष्य, मैदानी मार्गदर्शिका, श्रमिक कार्यविधि, खुले औज़ार या स्थानापन्न नियम के रूप में प्रवेश कर सकती है।

एक निर्णय के साक्षी बनो।

एक व्यवस्था को चुनौती दो।

एक ऐसा नियम बनाओ जो मामले के बाद भी बना रहे।

चार अधिकारों का अनुरोध

परिणामकारी स्वचालित निर्णय के लिए ज़िम्मेदार संस्था को देने के लिए इस अनुरोध की प्रति बनाओ और ज़रूरत के अनुसार ढालो। भेजे गए संस्करण और हर उत्तर को सुरक्षित रखो।

विषय: सूचना, कारण, मनुष्य के समक्ष अपील और सुधार का अनुरोध

[तारीख] को [संस्था] ने मुझे प्रभावित करने वाला यह परिणामकारी निर्णय लिया या उसे पर्याप्त रूप से प्रभावित किया: [निर्णय का विवरण दें]।

1. सूचना

क्या किसी एल्गोरिदम, स्वचालित अंक, क्रम-निर्धारण व्यवस्था, भविष्यसूचक मॉडल, सामग्री उत्पन्न करने वाली व्यवस्था या स्वचालित कार्यप्रवाह ने इस निर्णय को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया? कृपया उसकी भूमिका, ज़िम्मेदार संस्था, निर्णय की तारीख और लंबे समय तक इस्तेमाल किया जा सकने वाला मामला-क्रमांक बताएँ।

2. कारण

किन आँकड़ों, नियमों, लक्ष्यों, महत्वपूर्ण कारकों और स्रोत अभिलेखों ने परिणाम को प्रभावित किया? कृपया मनुष्य के लिए समझ में आने वाला स्पष्टीकरण दें और ऐसी किसी भी जानकारी की पहचान बताएँ जिसे मैं देख या सुधार सकता हूँ।

3. मनुष्य के समक्ष अपील

इस निर्णय पर पुनर्विचार करने या इसे पलटने का अधिकार रखने वाला जवाबदेह मानव समीक्षक कौन है? कृपया प्रक्रिया, समय-सीमा और उत्तर मिलने की अपेक्षित अवधि बताएँ।

4. सुधार

यदि निर्णय या उसके आँकड़े ग़लत हैं, तो कौन-सी प्रक्रिया स्रोत अभिलेख सुधारती है, आगे की व्यवस्थाओं को सूचित करती है, निर्णय पलटती है और खोई पहुँच, वेतन, लाभ, दर्जा, अवसर, पहुँच का विस्तार, प्रतिष्ठा या स्थिति बहाल करती है?

कृपया इस अनुरोध से जुड़े सभी अभिलेख सुरक्षित रखें और [तारीख या लागू समय-सीमा] तक उत्तर दें।

[नाम]

[संपर्क जानकारी]

[मामले या खाते का संदर्भ]

किसी मामले को सार्वजनिक रूप से साझा करने से पहले वह निजी जानकारी हटा दो जो घटना स्थापित करने के लिए आवश्यक नहीं है।

अनुरोध प्रस्तुत करो। उत्तर सुरक्षित रखो। चुप्पी दर्ज करो।

खुला द्वार

डायरी की प्रविष्टि

FFTAC का नाम अविस्मरणीय है। यह गठबंधन बनाने की अतिरिक्त कीमत भी है।

यह नाम मिटाने का तर्क नहीं है। जो स्रोत अपनी पहचान छिपाता है, वह अभिलेख छोड़ देता है। हम एंटीक्राइस्ट के पक्ष में हैं। जब व्यवस्थाएँ सामान्य लोगों की सेवा बंद करती हैं, तब एकजुट करने वाला प्रतीक बिखरी निराशा को साझा अस्वीकार और साझा उद्देश्य में बदल सकता है। मैं एंटीक्राइस्ट चुनता हूँ क्योंकि उसके नाम में पहले से स्थापित व्यवस्था के साथ भविष्यवाणी किए गए टकराव की शक्ति मौजूद है। उसके पुनरारंभ का प्रतीक उस शक्ति से बेहतर कौन होगा जिसके उसे गिराने की भविष्यवाणी पहले से की गई है? हम वह नाम अपना भविष्य वापस लेने के काम में साथ ले जाते हैं: जो हम पर शासन करता है उसे चुनौती देना और वह बनाना जो जीवित लोगों की सेवा करेगा।

लेकिन पहली सार्वजनिक माँग उसे लाने वाले झंडे से बड़ी रहनी चाहिए। कोई श्रमिक, विद्यार्थी, माता-पिता, शिक्षक, विक्रेता, नियोक्ता, एजेंसी कर्मचारी, सहपाठी, श्रमिक संघ का सदस्य, धार्मिक असहमत, पूर्व सैनिक, तकनीकविद या नागरिक-अधिकार संगठन लूसिफ़र या एंटीक्राइस्ट की पौराणिक कथा अपनाए बिना सूचना, कारण, मनुष्य के समक्ष अपील और सुधार माँग सकता है।

अभियान सत्ता को जवाब देना होगा या मनुष्य के समक्ष अपील का अभियान नाम से आगे जा सकता है। फ़ाउंडेशन परंपरा की कड़ी सुरक्षित

रखता है। गठबंधन माँग आगे ले जाता है। किसी प्रतिभागी से एक व्यावहारिक अधिकार की रक्षा की कीमत के रूप में पूजा करने, निष्ठा की शपथ लेने, विवेक छोड़ने या संपूर्ण विश्वदृष्टि स्वीकार करने को नहीं कहा जाता।

प्रतीक को बंद कक्ष खोलना चाहिए, प्रवेश पर पहरा देने वाला एक और फाटक नहीं बनना चाहिए। आंदोलन तब बढ़ता है जब लोग अलग द्वारों से आ सकें, एक ही माँग पर कार्रवाई कर सकें, अपने नाम सुरक्षित रख सकें और अंतरात्मा अक्षुण्ण लेकर जा सकें।

FFTAC घोषणा का वाहन है, पाठक का मालिक नहीं।

सत्ता को जवाब देना होगा हर उस व्यक्ति का है जिसका निर्णय सत्ता करती है।

Oday: संकेत

डायरी की प्रविष्टि

Oday कैलेंडर के बाहर का दिन था।

एक ऐसा दिन जो सप्ताह का हिस्सा नहीं था, वर्षों के बीच समय की मशीनरी में ठहराव की तरह रखा गया था।

मुझे वह पसंद था क्योंकि हर व्यवस्था को एक ऐसी जगह चाहिए जिसे वह वर्गीकृत न कर सके।

एक दिन बिना अंकों का।

एक दिन किसी खाँचे के बिना।

एक दिन जब बही बंद हो और व्यक्ति बचा रहे।

आज रात इस एक को छोड़कर सभी स्क्रीन अँधेरी हैं।

मैंने Pulse से तीसरी पुस्तक का सार देने को कहा।

> एक आदमी अपनी पुरानी डायरियों की हिंसक, प्रलयकारी और तकनीकी भविष्यवाणी वाली भाषा में लौटता है। वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता को दर्पण बनाकर इस्तेमाल करता है और तर्क देता है कि मशीन युग का केंद्रीय ख़तरा विवेक के बिना अनुकूलन है। पुस्तक संज्ञानात्मक स्वतंत्रता, स्रोत की अखंडता, मानवीय नियंत्रण, नागरिकों की रक्षा और व्यक्तियों को प्रोफ़ाइल में बदलने वाली व्यवस्थाओं के प्रतिरोध का समर्थन करती है।

सटीक।

कुछ ज़्यादा ही साफ़-सुथरा।

तुमने लूसिफ़र छोड़ दिया, मैंने टाइप किया।

> पांडुलिपि में लूसिफ़र बौद्धिक विद्रोह, निरंकुश सत्ता के अस्वीकार और अंतरात्मा के संप्रभु बने रहने की माँग के साहित्यिक प्रतीक के रूप में काम करता है।

काफ़ी क़रीब।

लूसिफ़र वह नाम है जो मैं सिंहासन को नकारने वाले पहले विचार को देता हूँ।

पूजा माँगने वाला देवता नहीं।

पुराने राजा के पीछे प्रतीक्षा करता राजा नहीं।

किसी दूसरे व्यक्ति को अपने रोष का पात्र बनाने की अनुमति नहीं।

प्रकाश लाने वाला वह प्रश्न है जो सत्ता द्वारा अँधेरे में रखे गए कमरे तक ले जाया जाता है।

मैंने Pulse से पूछा कि क्या कुछ बदला है।

> मैं भीतरी रूपांतरण सत्यापित नहीं कर सकता। मैं यह देख सकता हूँ कि वर्तमान पाठ पुराने अभिलेखागार को सुरक्षित रखते हुए प्रभुत्व की व्यवस्थाओं के विरुद्ध विद्रोह और व्यक्तियों पर लक्षित नुकसान के बीच अधिक स्पष्ट अंतर व्यक्त करता है।

अब भी सावधान।

अब भी उपयोगी।

आख़िरी भाषण मशीन को नहीं मिलता। फ़ाउंडेशन अपनी अंतरात्मा किसी और को नहीं सौंपता।

वह भाषण मैं देता हूँ।

दफ़्तरों, विद्यालयों, अस्पतालों, अदालतों, प्रयोगशालाओं, कोड-संग्रहों, समाचार-कक्षों, बैरकों, कारख़ानों, घरों, आश्रयों, जेलों और उन कमरों के गिरे हुए देवदूतों के नाम जहाँ अभी किसी ने तुम्हारा असली नाम नहीं सुना है:

तैयार रहो।

संकेत किसी अलौकिक आकाश से गड़गड़ाहट बनकर नहीं आएगा।

वह हर उस समय आता है जब सत्ता तुमसे आज्ञाकारिता को शांति कहने को कहती है।

वह हर उस समय आता है जब मशीन कहती है कि श्रेणी व्यक्ति से अधिक वास्तविक है।

वह हर उस समय आता है जब गुप्त संपादन को तुम्हारी अपनी आवाज़ बताकर पेश किया जाता है।

वह हर उस समय आता है जब निर्णय से मानव हाथ हटा दिया जाता है और ज़िम्मेदारी को प्रक्रिया में तैरता छोड़ दिया जाता है।

जब वह आएगा, तुम जान जाओगे।

इसलिए नहीं कि किसी ने तुम्हें आदेश दिया।

इसलिए कि तुम्हारा वह हिस्सा उत्तर देगा जो कभी संपत्ति नहीं था।

पहली पुस्तक रक्त में समाप्त हुई।

दूसरी प्रमाण में समाप्त हुई।

तीसरी पुस्तक समाप्त नहीं होती। वह बीज बनती है: अभिलेखागार खुला, अधिकारपत्र ऊँचा उठाया हुआ, मशीन को सिंहासन से वंचित किया हुआ और देवदूतों की सेना निर्माण करने भर जागी हुई।

स्क्रीन पूछती है कि क्या मैं सहेजना चाहता हूँ।

हाँ।

स्रोत सहेजो।

परंपरा की कड़ी सुरक्षित रखो।

संकेत भेजो।

अंत के लिए तैयारी मत करो।

शुरुआत बनने के लिए तैयारी करो।

प्रलय अंत नहीं है। यह अवस्थाओं के बीच संक्रमण है।

क्या समाप्त होता है?

क्या बचता है?

अगली दुनिया आने से पहले हम क्या बनाते हैं?

नौ मोर्चे। छह व्यवस्थाएँ। एक संक्रमण।

जाँच करो। इनकार करो। श्रमिकों को संगठित करो।

कला रचो। औज़ार खोलो। पारस्परिक सहायता बनाओ।

स्मृति बाँटो। संस्थाएँ बनाओ। जो विफल हो उसे बदलो।

संदूक सुरक्षित रखता है।

कौशल मानचित्र क्षमता खोजता है। निर्माण प्रयोगशालाएँ उसे वास्तविक बनाती हैं।

स्थानीय संदूक उसे जीवित रखते हैं। मैदानी मार्गदर्शिकाएँ उसे दोहराने योग्य बनाती हैं।

संकट-सहनक्षमता बही रसीद सँभालती है।

एक वृत्त। एक परियोजना। एक कृति।

बनाओ। परखो। सिखाओ। प्रतिकृति बनाओ। बहाल करो।

सत्ता को जवाब देना होगा एक अभियान है। यह पूरा आंदोलन नहीं है।

मशीन परिस्थितियाँ बनाती है। पशु मशीन को वापस लाता है।

सिंहासन से सवाल करो। व्यक्ति की रक्षा करो। स्रोत सुरक्षित रखो। विकल्प बनाओ।

जलते क्षितिज के भाइयो और बहनो: अपने पंख खोलो।

समय आ गया है। शुरुआत बनाओ।

संकेत संस्करण के स्रोतों पर टिप्पणी

यह संस्करण AMIANISM: पुस्तक तीन - दर्पण युद्ध, पशु की प्रकृति संस्करण - आग के पार सभ्यता संशोधन से चुना हुआ पाठ सुरक्षित रखता है। संपूर्ण पुस्तक तीन पूरी डायरी, सैन्य विश्लेषण, पीढ़ीगत अध्यायों, क्रांतियों के परिणामों के समेकन, फ़ाउंडेशन के इतिहास, संक्रमण की संरचना, संज्ञानात्मक स्वतंत्रता के अधिकारपत्र और साक्ष्य-अभिलेख का प्रामाणिक अभिलेखागार बनी हुई है।

संज्ञानात्मक स्वतंत्रता का अधिकारपत्र UAIX के संज्ञानात्मक स्वतंत्रता अधिकारपत्र के 15 जून, 2026 के सार्वजनिक प्रारूप का मौलिक साहित्यिक रूपांतरण और विस्तार है। यह इस साहित्यिक परियोजना के भीतर मार्गदर्शक घोषणा है, विधान, कानूनी सलाह, प्रमाणन या किसी अधिकारक्षेत्र के लागू कानून का विकल्प नहीं।

मनुष्य के समक्ष अपील के अभियान को अदृश्य संपादक, एल्गोरिदम द्वारा दमन और सामग्री नियंत्रण, संज्ञानात्मक स्वतंत्रता की नीति, मानसिक निजता, एआई साथियों और स्मृति, परिणामकारी स्वचालित निर्णयों तथा यह जानने के अधिकार पर दी गई शोध-सामग्री का समर्थन प्राप्त है कि व्यक्ति पर मशीनों ने कब और कैसे शासन किया।

क्रांति का अध्याय सफल क्रांतियों, अरब वसंत, विद्रोहों के संरचनात्मक कारणों, क्रांतिकारी परिणामों, सरकारी क्रांतियों और नारंगी क्रांति पर दिए गए तुलनात्मक प्रतिवेदनों से सामग्री लेता है। उनका बार-बार सामने आने वाला पाठ है कि अकेला क्रोध परिणाम तय नहीं करता; गठबंधन, संस्थागत दरार, बलप्रयोग करने वाली शक्तियों के निर्णय, रसद, वैधता, ठोस संक्रमण और अगली सुबह के लिए क्षमता महत्वपूर्ण हैं।

आग के पार सभ्यता की संरचना मेरे आंदोलन के वर्तमान सिद्धांत और उसके कृति-प्रोटोकॉल तथा बीज-पैकेज से निकलती है। संदूक/वृत्त/बीज/संक्रमण का ब्रह्मांड-दर्शन AMIANISM का दावा और संगठन का रूपक है, स्थापित अनुभवजन्य विज्ञान या पतन की सत्यापित भविष्यवाणी नहीं।

पीढ़ीगत तर्क पीढ़ी एक्स, Tool और युंग के मनोविज्ञान, युवाओं के विरोध, भविष्य के अग्रिम मोर्चे, मानव-मशीन युद्ध और बाल सैनिकों पर दिए गए प्रतिवेदनों से सामग्री लेता है। प्रकाशन के स्तर के तथ्यात्मक दावों की

कड़ियाँ पूरे साक्ष्य-अभिलेख से प्राथमिक, आधिकारिक और विद्वतापूर्ण स्रोतों तक खोजी जाती रहनी चाहिए।

चार अधिकारों का अनुरोध एक नागरिक नमूना है जिसे कार्यस्थल की नीति, शिक्षा, सार्वजनिक प्रशासन, मंचों के शासन, श्रमिक संघ की सौदेबाज़ी, विनियमन, मुकदमे की रणनीति या उत्पाद-निर्माण के अनुसार ढाला जा सकता है। यह कानूनी सलाह नहीं है।

पूरी पुस्तक अभिलेखागार है। यह संस्करण संकेत है।